केवल निजी वितरण के लिए

ECHOES
INDIA

श्री राम चंद्र मिशन

जुलाई २०१४ खंड ७, अंक ४

मणपाक्कम से समाचार

मई २०१४

भण्डारे के पश्चात्: गुरुदेव ने उदास होकर कहा; चूँकि भण्डारा अब सम्पन्न हो चुका है, अभ्यासी आश्रम छोड़ना प्रारम्भ कर देंगे तथा यह स्थल अब खाली हो जायेगा। यह भण्डारा इस रूप में विशेष रहा कि इस समारोह के सभी तीनों दिन प्रात:कालीन सत्संग गुरुदेव द्वारा ही कराये गये। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहा और जब भी संभव हुआ वे कॉटेज में सत्रों और चर्चाओं में मार्गदर्शन करते रहे। शनिवार, ३ मई की प्रात: नाश्ते के पश्चात् गुरुदेव अनेक लोगों से मिले और सिटिंग देने की इच्छा व्यक्त की। उन्होंने कुछ खास अभ्यासियों को अपने पास बुलाया, उनको एक लम्बी सिटिंग दी और शेष अभ्यासियों को उस दौरान बाहर बैठने के लिए कहा। उसके पश्चात् उन्होंने अभ्यासियों के समूह के साथ अपने कार्यालय कक्ष में वार्ता की।

नई गोल्फ गाड़ी: गुरुदेव के लिए एक पृथक होने वाली, विद्युत-चालित कुर्सी सहित नई गोल्फ गाड़ी लाई गई। अब पहियेदार कुर्सी को गोल्फ गाड़ी के साथ जोड़ा जा सकता है जो मालिक सहित कुर्सी को ऊपर उठाती है और उन्हें सही स्थिति में बैठाती है। गुरुदेव ने इस गोल्फ गाड़ी में बैठकर एक चक्कर लगाया और इसकी कार्य-प्रणाली से अत्यधिक प्रभावित हुए। इससे उन्हें गोल्फ गाड़ी के भीतर और बाहर आने में आसानी हो गयी थी तथा वे और अधिक नियमित रूप से आश्रम के चक्कर लगाने हेतु उत्सुक हुए।

क्योंकि उनके पौत्र भार्गव शहर में थे, गुरुदेव ने उनके एवं परिवार के साथ समय व्यतीत किया। उन्होंने विश्राम नहीं किया एवं बातचीत करते रहे तथा सायं ५:३० बजे वे अपनी नई गोल्फ गाड़ी से चक्कर लगाने गये जिसे भार्गव चला रहे थे।

गुरुदेव कुछ दिनों में ही अपनी पूर्व दिनचर्या में वापस आ गए; अपने ध्यान के लिए प्रात: ५ बजे उठना, समाचार पढ़वाना, नाश्ता ग्रहण करना और ई-मेल देखना। वे भारत में निर्वाचन प्रक्रिया पर चल रहे समाचारों पर गहरी नज़र रख रहे थे। जब वे समाचार देखते हैं तो वे पूर्णतया शान्त रहते हैं और प्रत्येक घटना का ध्यानपूर्वक अवलोकन करते हैं। वे 'एग्ज़िट पोल्स' एवं समालोचकों के विचारों को देखने में विशेष उत्सुक थे।

गुरुभाई का पारिवारिक दौरा: बाबूजी महाराज के गुरु भाइयों में से एक का परिवार, गुरुदेव से मिलने आया। यद्यपि गुरुदेव काफ़ी थके हुए थे फिर भी वे उनसे मिले और उन सभी को एक सिटिंग दी, जब कि वह उनके विश्राम का समय था।

पूज्य गुरुदेव टीवी धारावाहिक महादेव, महाभारत और बुद्ध देखते हैं। उन्होंने अनेक बार कहा है कि इन प्रसंगों को देखकर वे बहुत कुछ सीख रहे हैं। कुछ अभ्यासी जो गुरुदेव के साथ

इनको देखते हैं हिंदी नहीं समझते, अत: गुरुदेव उनके लिये संवादों का अनुवाद करते और समझाते हैं, जब कि टीवी प्रसंग चलता रहता है।

१९ मई को प्रात: १०.३० बजे गुरुदेव एक शौपिंग मॉल में गये। वे वहाँ पर कुछ समय तक रहे और लगभग २ बजे रेस्टोरैंट पहुँचे। उन्होंने लगभग पन्द्रह अभ्यासियों के साथ दोपहर का भोजन लिया। यद्यपि गुरुदेव ने बहुत थोड़ा ही खाया, परन्तु उन्होंने इस बात का ख्याल रखा कि प्रत्येक व्यक्ति ने ठीक से खा लिया था। वे एक परिपूर्ण मेजबान रहे। दुर्भाग्यवश इसमें वे बहुत थक गये और उनके शरीर में दर्द होने लगा। अगले २ दिन उनको बुखार रहा तथा चिकित्सकों ने उनको कुछ दवायें दी। कुछ ही दिन में उनकी हालत सुधरने लगी।

सीखना– एक सतत प्रक्रिया

२३ मई को गुरुदेव ने कुछ रूसी अभ्यासियों को सत्संग के लिये बुलाया। ध्यान के बाद उन्होंने कहा कि वे पुन: रूसी भाषा सीखने के लिये बहुत उत्सुक हैं। उन्होंने भाई अलेक्से को उनके लिये पाठ रिकॉर्ड करने के लिये बुलाया ताकि वे बाद में उसे सुन सकें। गुरुदेव ने कहा कि वे अपने पाठ खुद तैयार करेंगे, उनको रिकॉर्ड करेंगे तथा बाद में उनको सुनकर सीखेंगे।

शनिवार, २४ मई २०१४:

पुडुचेरि से करीब ६० अभ्यासी सप्ताहान्त के लिये मणपाक्कम आये। गुरुदेव अपने कॉटेज के बाहर ६ बजे आकर बैठे और इन अभ्यासियों के साथ लगभग ४५ मिनट व्यतीत किये।

रविवार, २५ मई को बहिन प्रिया और भाई कृष्णा के विवाह की सालगिरह थी। जैसे ही गुरुदेव सो कर उठे उन्होंने प्रसाद चढ़ाया और हर एक को दिया। गुरुदेव ने प्रात: ७ बजे सभी उपस्थित लोगों को ध्यान कराया।

सोमवार, २६ मई को गुरुदेव स्वास्थ्य परीक्षण कराने एम.आइ.ओ.टी. अस्पताल गये, क्योंकि उनका अस्थिर स्वास्थ्य चिन्ताजनक था। जाँच के परिणाम ठीक निकले। गुरुदेव ने भारत के प्रधानमंत्री के रूप में नरेन्द्र मोदी का शपथ ग्रहण समरोह देखा।

लालाजी मेमोरियल ओमेगा इन्टरनेशनल स्कूल:

दसवीं और बारहवीं दोनों कक्षाओं के सी.बी.एस.ई. परीक्षा परिणाम घोषित हो गये थे तथा ओमेगा स्कूल ने शत–प्रतिशत सफ़लता प्राप्त की। दसवीं कक्षा में १४२ छात्र सी.बी.एस.ई. परीक्षा में बैठे और सभी उत्तीर्ण हुए, जिसमें ९ छात्रों ने १० सीजीपीए प्राप्त की। गुरुदेव बहुत प्रसन्न थे और हर एक को यह खुशखबरी सुना रहे थे।

"स्मरण प्रेमी को प्रियतम के नज़दीक लाता है। इस निकटता की कोई सीमा नहीं होती। जितना अधिक प्रेम या अपनापन हो उतना ही व्यक्ति 'उसकी' ओर अधिक बढ़ता जाता है। यह नाता हमें विरासत में मिलता है। अब यह हम पर निर्भर करता है कि हम इस नाते को इतना विकसित करें कि 'उससे' परम निकटता पा सकें।"

बाबूजी महाराज
रामचन्द्र की संपूर्ण कृतियाँ खण्ड १, अध्याय "नियम २"

केरल प्रशिक्षक गोष्ठी

मई ३०, ३१ एवं जून १, २०१४

केरल से क़रीब पैंसठ प्रशिक्षक इस गोष्ठी में सम्मिलित होने के लिए मणपाक्कम में एकत्रित हुए। पहले दिन कमलेश भाई ने समूह को सम्बोधित किया। प्रशिक्षकों के लिए प्रत्येक दिन एक दूसरे को सिटिंग देने के साथ-साथ अधिवेशनों का आयोजन भी किया गया था। इन अधिवेशनों में गुरुदेव के उद्धरण पर चिन्तन, बाद में चर्चा और विचारों का आदान-प्रदान, भाई राजेश राठोड़ द्वारा प्रश्नोत्तर सत्र और सेवा कार्य पर सत्र आदि का समावेश था। इस सत्र में सेवा कार्य करते हुए, वार्तालाप के नियमों तथा सुनने व सहिष्णुता की कला को ध्यान में रखकर, स्वयं का अवलोकन करने पर ज़ोर दिया गया। इस सत्र के लिए छत के ऊपर बागबानी करने के क्रिया-कलाप का प्रबन्ध किया गया था। सभी प्रशिक्षकों ने पुस्तकालय भवन के ऊपर की छत पर सब्ज़ियों का बगीचा तैयार करने के लिए मिलजुल कर काम किया। ३१ मई को गुरुदेव सभी प्रशिक्षकों से मिले और उन्हें एक सिटिंग दी। बैठक रविवार को दो वीडियो सत्रों के साथ समाप्त हुई – पहला वीडियो सत्र भाई कमलेश पटेल द्वारा छोटी-छोटी किन्तु उपयुक्त बातों द्वारा किस तरह केन्द्र को क्रि ाशील बनाया जाए, और दूसरा वीडियो सत्र गुरुदेव द्वारा सूक्ष्मता/शुद्धता के बारे में था।

ओमेगा के भूतपूर्व छात्रों की तीसरी संगोष्ठी

जून ९ से १४, २०१४

९ जून को भाई कमलेश द्वारा कराये सत्संग के साथ संगोष्ठी प्रारम्भ हुई। शीघ्र ही वे संगोष्ठी कक्ष में एकत्रित हुए और उन्होंने भाई कमलेश द्वारा संबोधित एक लघु किन्तु ज्ञानवर्धक वार्ता को सुना। आने वाले दिनों को विभिन्न आगन्तुक अभ्यासियों के संग वार्ताओं एवं सत्रों में, काफ़ी मात्रा में स्वयंसेवा के कार्य-कलापों में, आगामी सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अभ्यास में और ध्यान तथा अभ्यास में विभाजित किया

गया था। उनके लिए यह सेमीनार और गोष्ठियाँ मनोरंजक होने के साथ-साथ ज्ञानपरक थीं और उनमें जीवन एवं मूल्यों के अनेक पक्षों का उल्लेख था। १२ जून को उन्हें गुरुदेव द्वारा कॉटेज में सिटिंग मिली। गुरुदेव ने एक छोटी वार्ता दी जिसमें उन्होंने १४ जून के दिन को ओमेगा पूर्वछात्र दिवस घोषित किया। १४ तारीख़ को पूर्वछात्रों ने एल.एम.ओ.आइ.एस. का भ्रमण किया और अपने अध्यापकों तथा वॉर्डनों (संरक्षकों) के साथ काफ़ी विस्मयकारी समय बिताया एवं बच्चों का हौसला बढ़ाने के लिए सलाह दीं। आश्रम वापस आने के बाद इस यात्रा का अन्तिम चरण, सांस्कृतिक कार्यक्रम आरम्भ हुआ। इसे सबके द्वारा अतीव सुन्दरता से पेश किया गया और एक बार फ़िर उन सभी को गुरुदेव से मिलने का संयोग हुआ और उन्होंने उनके साथ एक सामूहिक फ़ोटो खिंचवाया। प्रतिभागियों के लिए कार्यक्रम अत्यन्त तृप्तिदायक और स्मरणीय रहा।

नये प्रशिक्षकों को तैयार करने हेतु गोष्ठी

३१ मई से १४ जून, २०१४

पूरे भारतवर्ष से लगभग २७ भावी प्रशिक्षक अभ्यर्थी अपनी तैयारी प्रक्रिया के निहित मणपाक्कम में आयोजित दो सप्ताह की गहन गोष्ठी में सम्मिलित हुए। तैयारी की सिटिंग के अतिरिक्त उन्हें सुबह के सत्रों में कार्यशालाओं में भाग लेना था और सायंकालीन सत्रों में उन्हें प्रशिक्षकों के कार्य के विषय पर गुरुदेव एवं कमलेश भाई के कुछ चयनित वीडियो दिखाये गये। इसके बाद उन्हें विषय की गहराई में ले जाने के लिए उसी विषय पर चर्चायें की गईं। प्रतिभागियों ने अलग-अलग समूहों में 'सत्य का उदय' पुस्तक से लिए गये कुछ अध्यायों पर चर्चायें की और उन पर प्रस्तुतिकरण दिये। दो सत्र सेवा कार्य के लिए निर्धारित किये गये थे जहाँ उन्होंने बागबानी और समतलीकरण का कार्य किया। गोष्ठी के अन्त में प्रतिभागियों को चाँदनी रात में भोजन के दौरान कमलेश भाई के साथ समय बिताने का अवसर मिला।

सहज मार्ग के प्रति मेरा दृष्टिकोण

पनवेल, मुम्बई

भाई मोहनदास हेगड़े, निर्देशक, क्रेस्ट बंगलौर ने २५ मई को अप–नी मुम्बई यात्रा के दौरान पनवेल आश्रम में एकत्रित लगभग अस्सी (८०) अभ्यासियों के लिये एक सत्र का संचालन किया। उपस्थित सभी अभ्यासियों ने सत्र के विषय "सहज मार्ग के प्रति मेरा दृष्टिकोण" पर आत्मावलोकन किया तथा इस विषय पर अपने वर्तमान विचार व जब उन्होंने अभ्यास प्रारम्भ किया था तब के विचारों को एक–दूसरे से बाँटा।

उन्होंने समझाया कि पहली बार जो सिटिंग हम प्राप्त करते हैं वह गुरुदेव द्वारा दी गई सर्वाधिक शक्तिशाली सिटिंग होती है, जिसमें हमारे हृदय में बीजारोपण होता है और आत्मा जागृत होती है। उन्होंने सभी से पूछा कि क्या वे मालिक द्वारा किये गये इस कार्य का महत्व समझते हैं और क्या वे अपनी आध्यात्मिक उन्नति में भाग लेने के इच्छुक हैं। उन्होंने प्रार्थना के महत्व व स्पष्ट ध्येय रख–ाने पर भी जोर दिया।

अंचल प्रभारी का परमाकुडी केन्द्र का भ्रमण

तमिलनाडु (२ डी) के अंचल प्रभारी, भाई पी. रामनाथन ने १७ मई को परमाकुडी केन्द्र का भ्रमण किया। परमाकुडी, मनमदुराई, रामानाथपुरम व शिवगंगाई केन्द्रों के प्रशिक्षक सहित लगभग ६४ अभ्यासियों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। प्रात:कालीन सत्संग के पश्चात् खुली चर्चा आयोजित की गई, जिसमें लगभग २० आमन्त्रित व्यक्ति उपस्थित थे। भाई रामानाथन, राधाकृष्णन, कुमार व भास्करन ने प्रतिभागियों को ध्यान का उद्देश्य, सहज मार्ग के प्रमुख तत्व व इसकी प्रभावोत्पादकता के बारे में बताया। आमन्त्रित १० लोग सहज मार्ग अभ्यास प्रारम्भ करने के इच्छुक हुए और उनमें से ८ लोगों ने तुरन्त अपनी परिचयात्मक सिटिंग आरम्भ कर दी।

ध्यान से होने वाले अनुभवों व उपलब्धियों पर अभ्यासियों की वार्ता के पश्चात् शाम के सत्संग के साथ सत्र का समापन हुआ।

आई.आई.एस.सी. बंगलौर के अभ्यासियों का मणपाक्कम भ्रमण

भारतीय विज्ञान संस्थान, बंगलौर परिसर में अब लगभग ४० अभ्यासी हैं। भाई ए. पेरूमल, जो इस संस्थान के अवकाश प्राप्त प्रोफ़ेसर तथा मिशन के एक प्रशिक्षक भी हैं, ७ व ८ जून को इन अभ्यासियों को साथ लेकर बी.एम.ए. मणपाक्कम भ्रमण पर आये। अपने प्रवास के दौरान इन युवा अभ्यासियों ने सत्संग में भाग लेने के अलावा, प्रसन्नता से स्वैच्छिक कार्य के रूप में आम तोड़ने में योगदान दिया। इनके भ्रमण का मुख्य आकर्षण गुरुदेव के साथ वह छोटी मुलाकात थी जो पहले ही दिन सायंकाल के समय हुई थी और जब गुरुदेव ने व्यक्तिगत रुप में इन सभी से उनके विषय में जानकारी प्राप्त की व सबको आशीर्वाद दिया था।

रविवार के सत्संग के पश्चात् इन अभ्यासियों ने मिशन के तीन अनुभवी अभ्यासी भाइयों वी.के.सोमकुमार, ए.पी.दुरई व अलबर्टो लाफ़रांची से भेंट की, जिन्होंने मालिक, मिशन व पद्धति से संबन्धित कई प्रश्नों के उत्तर दिये। उनके उत्तरों में कई रोचक प्रसंग व व्यक्तिगत अनुभव सम्मिलित थे। वापस लौटते हुए समूह के सभी सदस्य स्वयं को आध्यात्मिक रूप से समृद्ध व अपने अभ्यास को अच्छी प्रकार से करने के प्रति पहले से अधिक अभिप्रेरित महसूस कर रहे थे।

संकाय विकास कार्यक्रम, खड़गपुर

फरवरी २०१४ में पटना में आयोजित आंचलिक बैठक में यह महसूस किया गया कि बिहार और झारखंड में "ग्राउन्डिंग इन दी प्रेक्टिस" (जी.आई.टी.पी) कार्यक्रम को गति प्रदान करने के लिये बड़ी संख्या में स्वयंसेवकों की आवश्यकता है। परिणामस्वरुप भाई मनोज तिवारी (अंचल प्रभारी, अंचल १७ व २०) द्वारा बिहार से ३४, झारखंड से २२, पश्चिम बंगाल व उत्तरी सिक्किम से २ और पश्चिम बंगाल दक्षिण से १८ प्रतिभागियों के लिये क्रेस्ट, खड़गपुर में एक संकाय विकास कार्यक्रम आयोजित किया गया।

बहन नंदिता माथुर, छवि सिसोदिया और भाई संतोष श्रीनिवासन व अल्बर्टो लेफरांची की सहायता से नये स्वयंसेवक शिक्षकों ने एक जगह एकत्रित होकर, न केवल प्रतिभागियों को प्रशिक्षित करने के लिये बल्कि स्वयं के लिये भी, कठिन अध्ययन व तैयारी की।

फीडबैक से पुष्टि हुई कि कार्यक्रम बहुत प्रभावी था तथा प्रत्येक के लिये काफी शिक्षाप्रद था। कार्यक्रम में प्रकटन, हँसी-खुशी, गहन चिंतन, कठिन परिश्रम के अनेक क्षण थे और सर्वाधिक महत्वपूर्ण सभी में भाईचारे का एक अनोखा वातावरण था। अब पचास प्रशिक्षु जी.आई.टी.पी. कार्यक्रम चलाने के लिये और पच्चीस सहायता के लिये तैयार हैं।

प्रशिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम, जबलपुर

५ से ८ जून तक मध्य प्रदेश (पूर्व व पश्चिम) और विदिशा के प्रशिक्षकों के लिये आंचलिक आश्रम (८ बी) जबलपुर में एक चार दिवसीय "प्रशिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम" आयोजित किया गया। सत्रों का संचालन भाई संतोष श्रीनिवासन ने किया। कार्यक्रम का गुरुदेव द्वारा निर्धारित विषय था–"हृदय के विकास के लिए हृदय से कार्य कीजिये"। कार्यक्रम की विशेषता थी कि इसकी कोई नियत सूची नहीं थी और यह खामोशी में हृदय से चला। सभी प्रतिभागियों ने कार्यक्रम की सराहना की और आध्यात्मिक उत्साह का आनन्द लिया।

पुनर्जागरण – उत्तर तमिलनाडु

अंचल २ ए के सेलम, कृष्णागिरी, वैल्लोर (वडविरिंचिपुरम) में २५ मई को तथा हरुर में १ जून को "दस नियम–चरित्र निर्माण के उपकरण" विषय पर नई उर्जा का संचार करने वाली आध्यात्मिक गोष्ठियों का आयोजन किया गया। फ़ैसिलिटेटर्स क्रमशः बहन एजिलारसी, भाई रघुपति, सुदर्शन और मुरुगरेसन उपरोक्त चार केन्द्रों के अभ्यासियों का मार्गदर्शन करने व उन्हें जानकारी देने के लिये आमन्त्रित किये गये थे। नियम १ व नियम ३ पर चर्चा हुई।

सत्र बहुत संवादात्मक थे और गुरुदेव तथा बाबूजी महाराज के कथनों और उनके पारस्परिक सम्बधों पर केन्द्रित उद्धरण से भरपूर थे। उनमें वास्तविक जीवन के व्यक्तिगत अनुभवों को साझा करने के लिये व्यवहारिक बिन्दु थे। गोष्ठी से सभी प्रतिभागियों को आनन्द प्राप्त हुआ, जिसे वे अपने केन्द्रों में बाँटने के लिये अपने साथ घर ले गये।

हरुर

सेलम

कृष्णागिरी

ध्यानकक्ष का उद्घाटन

नवसारी, गुजरात

नवसारी जो मिशन का गुजरात में सबसे पुराना केन्द्र है, के पास भूमि का एक काफ़ी बड़ा टुकड़ा है जो कि नगर की सीमा के पास स्थित है। इस केन्द्र के अभ्यासियों की यह तीव्र लालसा थी कि इस भूमि पर एक ध्यान कक्ष की सुविधा उपलब्ध हो। उन्होंने अपने स्वप्न को वास्तविकता में बदलने के लिये कड़ी मेहनत की और एक अस्थाई ध्यानकक्ष का निर्माण किया। पूज्य गुरुदेव की अनुमति से ११ मई २०१४ को आंचलिक प्रभारी (६ बी) भाई सुरेन्द्र अग्रवाल द्वारा ध्यानकक्ष का उद्घाटन किया गया और वहाँ नवसारी तथा उसके आस पास के केन्द्रों चिखली, बिल्लीमौरा और अमलसाद के लगभग एक सौ अभ्यासियों को सत्संग कराया। इस अवसर पर उन्होंने आश्रम की उपयोगिता पर प्रकाश डाला और साथ ही इस बात पर भी जोर दिया कि समय तेजी से बीता जा रहा है अत: हमें अपने लक्ष्य पर हर समय ध्यान केन्द्रित रखना चाहिये और हम सभी को अपने आश्रम (प्रकाश केन्द्र) का प्रभावी ढंग से उपयोग करना चाहिये। रविवार का सत्संग अब नवसारी आश्रम में स्थानान्तरित कर दिया गया है। सभी ने गुरुदेव की उपस्थिति को महसूस किया। केन्द्र प्रभारी भाई नितिन हरियाणी ने नवसारी केन्द्र के सभी स्वयंसेवकों द्वारा किये गये कठोर परिश्रम की प्रशंसा की तथा वल्साड केन्द्र के सभी स्वयंसेवकों द्वारा किये गये प्रयासों का भी उल्लेख किया ।

आंचलिक बैठक, हरियाणा

अंचल संख्या २१ हरियाणा ने २५ मई को सोनीपत आश्रम में आंचलिक बैठक आयोजित की, जहाँ प्रशिक्षकों, समन्वयकों, फ़ेसिलिटेटर्स, स्वयंसेवकों और सभी केन्द्रों के केन्द्र-प्रभारियों को आमंत्रित किया गया। बैठक की अध्यक्षता डा. सत्य एन. मंडल (अंचल प्रभारी) ने की। केन्द्र प्रभारियों

ने अपने अपने केन्द्रों के विषय में तथा विभिन्न आंचलिक समन्वयकों ने अपने अपने विषयों जैसे प्रशिक्षण और विकास, यू कनेक्ट, मूल्य शिक्षा, निबंध लेखन, आई टी, अभ्यासी पंजीकरण, स्वयंसेवी कार्यों, एकोज़ न्यूज़लैटर (पत्रिका), इतिहास तथा लेखा पर प्रस्तुतियाँ दीं। प्रस्तुतिकरण के बाद नये केन्द्रों को विकसित करने के तरीकों पर चर्चा हुई और उपलब्ध संसाधनों का पूर्ण उपयोग करने एवं नये और दूर-दराज के केन्द्रों के अभ्यासियों को सुविधा प्रदान करने के लिये केन्द्रों के ५ छोटे समूह बनाने का निर्णय लिया गया।

मिशन के कार्यक्रमों पर आधारित प्रशिक्षण, शाहजहाँपुर

अंचल संख्या १२ब के ११ प्रशिक्षकों और ४१ अभ्यासियों के लिये योगाश्रम शाहजहाँपुर में दिनांक ९ से ११ मई २०१४ तक एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें उन्हें वी.बी.एस.सी., होम गेदरिंग, ओपन हाउस और निबंध लेखन आदि कार्यक्रमों का संचालन करने के विषय में बताया गया। भाई उमाशंकर बाजपई (सचिव) और भाई प्रभात कुमार (अंचल प्रभारी) मुख्य वक्ता थे। प्रतिभागी नई ऊर्जा और विचारों से भरे हुए थे। उन्होनें अपने अपने केन्द्रों पर वी.बी.एस.सी. कार्यक्रम को शुरु करने के प्रति प्रतिबद्धता व्यक्त की। प्रतिभागियों ने निबंध लेखन कार्यक्रम के आयोजन पर भी चर्चा की।

युवा सत्र

बनशंकरी आश्रम, बंगलौर

१४ और १५ जून २०१४ को बंगलौर के लगभग ३५ युवा अभ्यासियों ने एक सप्ताहांत आवासीय कार्यक्रम का आयोजन किया। शनिवार को पंजीकरण के पश्चात् आपसी परिचय तथा आईस–ब्रेकर खेल का आयोजन हुआ। तत्पश्चात् 'तरंग और चिंतन' (रिप्पल और रिफलेक्शन) तथा 'पूर्वाग्रह और धारणा' (प्रिज्यूडिस और जजमैंट) विषयों पर सत्र आयोजित किए गये। प्रत्येक सत्र में प्रतिभागियों को आत्मनिरीक्षण और अपने विचार साझा करने के लिए पर्याप्त समय दिया गया, तदोपरांत विषय पर आधारित एक गतिविधि भी आयोजित की गयी। विषयवस्तु पर आधारित गुरुदेव की वार्ता की एक वीडियो क्लिप दिखायी गयी। अपराह्न में कुछ समय स्वैच्छिक कार्य में बिताया गया। 'प्रकृति के साथ सामंजस्य' विषय पर एक सत्र आयोजित किया गया जिसका उद्देश्य यह बताना था कि सादगी के साथ जीवन जीने का क्या अर्थ है और हम किस प्रकार आवश्यकताओं न कि इच्छाओं पर आधारित अपना जीवन जीयें।

रविवार का प्रथम सत्र वरिष्ठ अभ्यासियों के पैनल के साथ बातचीत का था जिसमें कई बातों का समावेश था, जैसे सहज मार्ग के संदेश का प्रसार कैसे किया जाये, जीवन में संतुलन की स्थापना करना तथा स्वैच्छिक कार्य के प्रति प्रोत्साहित करना इत्यादि। दोपहर के भोजन के पश्चात् एक भाई ने समूह को बताया कि 'वैल्कम डेस्क' के माध्यम से किस प्रकार सहज मार्ग के जिज्ञासुओं के साथ संवाद किया जाना चाहिये। उन्होंने यह भी सूचित किया कि जो अभ्यासी इस कार्य को करने के इच्छुक हैं उन्हें प्रशिक्षित किया जा सकता है। अन्तिम सत्र में, संवाद साधने की योग्यता के महत्व को एक खेल के द्वारा दर्शाया गया। इसके उपरान्त नमूने के तौर पर प्रेरणादायक भाषणों के कुछ वीडियो दिखाये गये। इससे प्रतिभागियों को कुछ सूत्र मिले और इस प्रकार उन्होंने छोटे समूहों में 'पिक एण्ड टॉक' शुरू किया। तब प्रत्येक समूह से एक व्यक्ति चुनने के लिए कहा गया जो सार्वजनिक वार्ता के लिये बताये गए तरीके को ध्यान में रखते हुए एक विषय पर वार्ता दे। जब कार्यक्रम समाप्त हुआ तो प्रतिभागियों ने इस पहल का हिस्सा बनने पर प्रसन्नता व्यक्त की।

भीलवाड़ा, राजस्थान

२७ अप्रैल २०१४ को भीलवाड़ा केन्द्र में आयोजित युवा गोष्ठी में १३ अभ्यासियों ने भाग लिया। उन्होंने भण्डारों के दौरान हुए अनुभवों को बाँटा और फ़िर इस विषय पर चर्चा की कि ऐसे कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए स्वयं को किस प्रकार तैयार किया जाये। यह सुझाव दिया गया कि सभी अभ्यासियों को भण्डारा उत्सवों में भाग लेने से पहले कम से कम दो व्यक्तिगत सिटिंग अवश्य लेनी चाहिए। एक अन्य महत्वपूर्ण बिंदु यह आया कि किस प्रकार भण्डारों के दौरान प्राप्त स्थिति को अधिक से अधिक लंबे समय तक बनाये रखा जा सकता है। प्रतिभागियों ने निर्णय लिया कि वे चाहे तिरुप्पुर में आयोजित भन्डारे में सम्मिलित हों अथवा अपने केन्द्र भीलवाड़ा में, वे अपनी तैयारी समान गम्भीरता से करेंगे।

विजयवाड़ा, आँध्र प्रदेश

११ मई २०१४ को आयोजित एक युवा सेमिनार में बडी संख्या में युवाओं तथा अन्य अभ्यासियों ने भाग लिया। विषय इस प्रकार थे; 'चरित्र निर्माण' और 'एक अभ्यासी के जीवन में धन की भूमिका'। उद्घाटन भाषण में केंद्र प्रभारी ने युवाओं का आह्वान किया कि वे अपने कार्यों पर अधिक से अधिक ध्यान दें और अपने दायित्वों का निर्वहन बिना पूर्वाग्रह के सक्रिय रहते हुए करें। भाई राम चन्द्र ने अपने संबोधन में चरित्र निर्माण के संदर्भ में मानवीय चेतना के विभिन्न स्तरों का विस्तृत निरूपण किया।

युवा अभ्यासियों द्वारा कुल मिलाकर दस प्रस्तुतियाँ दी गयीं, तत्पश्चात् एक समूह चर्चा हुई। प्रस्तुतियाँ काफ़ी उपयोगी थीं। उनमें अवधारणात्मक पक्षों के साथ साथ व्यक्तिगत अनुभवों का भी समावेश था। अभ्यासियों द्वारा बताया गया कि उन्हें साधना से सम्बन्धित विभिन्न विषयों पर काफ़ी अच्छी समझ मिली जो कि उनके भविष्य में किये जाने वाले प्रयासों के सन्दर्भ में अत्यधिक लाभदायक सिद्ध होगी। गुरुदेव द्वारा प्रेम विषय पर दिये गये संदेश के वीडियो प्रस्तुति के साथ सेमिनार का शानदार समापन हुआ। पूरे कार्यक्रम के दौरान गुरुदेव की दिव्य उपस्थिति का अनुभव किया गया।

कोठागुडेम, आन्ध्र प्रदेश

आध्यात्मिक मूल्यों के सुदृढ़ीकरण तथा उनकी समझ विकसित करने एवं मिशन की विभिन्न गतिविधियों के प्रति अपनत्व का भाव विकसित करने की दृष्टि से २० अप्रेल २०१४ को कोठागुडेम आश्रम में युवा अभ्यासियों के लिये सम्वादात्मक सत्र का आयोजन किया गया। अस्वापुरम, भद्राचलम तथा पोलवांचा केन्द्रों के युवाओं द्वारा भी इस सत्र में सहभागिता की गयी। यह एक पूर्ण दिवसीय सत्र था जिसका शुभारम्भ इन विषयों पर चर्चा के साथ किया गया – 'युवावस्था संभावना एवं प्रयास का समय क्यों है?', 'एक युवा के रूप में आपकी भविष्य के प्रति क्या सोच है?', 'युवा समूहों की संरचना व उद्देश्य क्या होने चाहिये?', 'सहज मार्ग युवाओं को और अधिक निकट लाने तथा प्रेरित व प्रोत्साहित करने के लिये किस प्रकार के कार्यक्रम किये जाने चाहिये?' तथा 'युवावर्ग मिशन के विभिन्न कार्यों में किस प्रकार योगदान दे सकता है?'। सभी प्रतिभागी इस विषय पर अपने विचारों का आदान प्रदान कर अत्यन्त प्रसन्नता का अनुभव कर रहे थे कि वे अपनी मानसिक व शारीरिक उर्जा को किस प्रकार से उपयोग करें ताकि वे समाज में एक आदर्श उदाहरण प्रस्तुत कर सकें। इस सत्र में विचारों का आदान प्रदान प्रदर्शनात्मक कार्यकलापों द्वारा किया गया जिससे युवा अभ्यासी भी अपने अधिकतम स्तर तक भागीदारी कर सके।

वाराणसी, उत्तर प्रदेश

दिनांक ११ मई २०१४ को वाराणसी केन्द्र में एक पूर्ण दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया। अभ्यासियों को मिशन का साहित्य पढ़ने के लिये प्रेरित करने के उद्देश्य से केन्द्र में मिशन की कुछ चुनी हुई पुस्तकों पर आधारित पहेली कार्यक्रम आयोजित किये जाते रहे हैं। वर्तमान सत्र सहित पिछले तीन सत्रों में यह कार्यक्रम 'मेरे गुरुदेव' पुस्तक पर आधारित थे। अभ्यासियों को पचास प्रश्न दिये गये एवं उनका उत्तर देने के लिये तीस मिनट का समय दिया गया। आधे घन्टे के बाद पुस्तक के उचित सन्दर्भ के साथ सही उत्तर बताये गये। इस प्रकार प्रतिभागियों ने यह महसूस किया कि मिशन की पुस्तकों का बारीकी से अध्ययन किया जाना चाहिये। भोजन के पश्चात् वाले सत्र में 'मेरे गुरुदेव' पुस्तक के कुछ अंशों पर चर्चा की गयी। इस कार्यक्रम के प्रभाव स्वरूप यह लाभ हुआ कि अभ्यासी काफ़ी अधिक संख्या में आश्रम में दिन भर रुके रहे और उन्होंने कार्यक्रम का जी भर कर आनन्द लिया। परिणाम स्वरूप सायंकालीन सत्संग में उपस्थिति अच्छी रही।

दिल से दिल कार्यक्रम, इन्दौर, मध्य प्रदेश

१५ जून २०१४ को इन्दौर आश्रम में एक 'दिल से दिल' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम की तैयारी लगभग एक माह पूर्व उस उद्घोषणा के साथ प्रारम्भ हो गयी थी, जिसमें अभ्यासियों से यह अनुरोध किया गया था कि वे अपने सामाजिक एवं कार्य क्षेत्र से सम्बन्धित उन व्यक्तियों की सूची उपलब्ध करायें जो कि आध्यात्मिकता में रुचि रखते हों। तत्काल की लगभग ३०० व्यक्तियों की एक सूची तैयार कर ली गयी और उन्हें उक्त कार्यक्रम में भाग लेने के लिये आमन्त्रित किया गया। स्वयं सेवकों द्वारा काफ़ी परिश्रम के साथ यह कोशिश की गयी कि अधिक से अधिक लोग इस कार्यक्रम में भाग ले सकें।

१५ जून को आयोजित इस कार्यक्रम में लगभग १८० व्यक्तियों ने भाग लिया। कार्यक्रम में मुख्य वार्ता का विषय था 'आध्यात्मिकता – जीवन की सर्वोच्च आवश्यकता'। विषय वस्तु को काफ़ी विस्तार से एवं उदाहरणों सहित समझाया गया। इसके उपरान्त सहज मार्ग तथा इसका दर्शन विषय पर एक प्रस्तुति दी गयी। अन्त में एक प्रश्नोत्तर सत्र का आयोजन किया गया जिसके उपरान्त लगभग ४० व्यक्तियों द्वारा पद्धति को अपनाने के प्रति रुचि प्रकट की गयी। सभागार में एक पृथक स्थान निर्धारित किया गया था जहाँ पर स्वयंसेवकों द्वारा आकांक्षियों हेतु प्रारम्भिक सिटिंग की व्यवस्था की गयी। भोजनावकास के दौरान लगभग १० अभ्यासियों के समूह द्वारा उक्त आकांक्षियों के साथ गहराई से चर्चा की गयी जिसमें उनकी शंकाओं का समाधान प्रस्तुत किया गया।

यह एक ऐसा आयोजन था जिससे हमारे स्वयंसेवी समूह को गुरुदेव के कार्य में सहायक होने का सुअवसर प्राप्त हुआ। लगभग तीस भाइयों व बहिनों के समूह ने कार्यक्रम को सफ़ल बनाने के लिये सारी व्यवस्थायें संभाली।

ग्रीष्मकालीन शिविर

अप्रैल और मई माह के दौरान भारत के विभिन्न केंद्रों में ग्रीष्मकालीन शिविर आयोजित किये गये। प्रत्येक केन्द्र में समर्पित स्वयंसेवकों द्वारा, जिन्होंने इनकी सफ़लता के लिये भरसक प्रयत्न किये, ऐसे शिविर का आयोजन किया गया। इन शिविरों का उद्देश्य बच्चों में नैतिक मूल्यों को समाविष्ट कर उन्हें अभिप्रेरित करना था। फोटोग्राफ़ी कार्यशाला, संगीत, चित्रकारी, कहानी कथन, खज़ाने की खोज, कागज के थैले बनाना, चलचित्र प्रदर्शन, प्रश्नोत्तरी, कार्निवाल, लघु विज्ञान मेला, बांधनी कला, एनीमेशन, कागज के आभूषण बनाना जैसे कार्यकलापों ने उन्हें शिविर में व्यस्त रखा। खेलकूद तथा मूक पहेली जैसी गतिविधियों और मूल्य आधारित विषयों पर लघु नाटिकाओं ने बच्चों को खेल-खेल में जीवन मूल्यों को सीखने में सहायता की। अधिक आयु के बच्चों को परिचर्चा, प्रस्तुतिकरण और शिक्षाप्रद वीडियो दिखाये गये। कुछ केन्द्रों में इन गतिविधियों द्वारा युवाओं को आध्यात्मिकता से परिचित कराने का मार्ग प्रशस्त हुआ।

बी.एम.ए. पनवेल, **मुम्बई** में ११० बच्चों ने तीन दिवसीय शिविर में भाग लिया। अंतिम दिन उन्हें एक रुमाल पर एक दूसरे साथी का एक सकारात्मक गुण लिखने के लिये कहा गया और इस रूमाल को वे अपने साथ यादगार के रूप मे ले गये। करीब ३० बच्चों ने **रायचूर** आश्रम, कर्नाटक में दो दिवसीय शिविर में भाग लिया। उन्होंने सत्र का भरपूर आनन्द उठाया और कहा कि उन्होंने बहुत कुछ सीखा है। उन्होंने आयोजकों से सत्र को कुछ दिन और बढ़ाने की प्रार्थना भी की।

विभिन्न स्कूलों के साठ बच्चों ने **सीतापुर**, उत्तर प्रदेश में आयोजित नौ दिवसीय ग्रीष्मकालीन शिविर में भाग लिया। यू-कनेक्ट टीम द्वारा **बीकानेर** के एक अभ्यासी के ट्यूशन केन्द्र में युवाओं को आध्यात्मिकता से परिचित कराने के उद्देश्य से दस दिवसीय ग्रीष्मकालीन शिविर का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में सामान्य जागरुकता और स्व-विकास से सम्बन्धित विषयों पर वार्तायें दी गयीं और उसके बाद कुछ अन्य गतिविधियों का आयोजन किया गया।

करीब साठ बच्चों ने बनशंकरी आश्रम, **बंगलौर**, कर्नाटक में आयोजित शिविर में भाग लिया।

त्रिची आश्रम, तमिलनाडु में आयोजित शिविर में प्रेरक विषयों और आनन्दित करने वाली गतिविधियों के साथ-साथ "अग्नि सुरक्षा और बचाव के उपाय" विषय पर भी एक सत्र रखा गया। बच्चों को जानकी फ़ार्म की सैर पर ले जाया गया जहाँ उन्होंने गुड़ बनते हुए देखा, जो उनके लिये एक अत्यधिक आनन्दित करने वाला दृश्य था।

मणपाक्कम में आयोजित तीन दिवसीय शिविर के प्रत्येक प्रतिभागी को घर में विकसित करने और प्रेम से सींचने के लिये एक पौधा उपहार में दिया गया जो कि उनके स्वयं के विकास के समानांतर एक प्रेरणादायक वस्तु के रुप में कार्य करे एवं जीवन में एक संतुलन स्थापित करने का प्रतीक बने। प्रतिभागियों ने 'मई पोल नृत्य' में भी भाग लिया जो कि यूरोप में मई माह के प्रारम्भ में किया जाने वाला एक पारम्परिक लोकनृत्य है। अधिकांश बच्चों ने अपने प्रतिदिन के अनुभवों और मनोभावों को अपनी कैम्प डायरी में लिपिबद्ध किया। आभार के प्रतीक स्वरूप एक ग्रुप फोटो, बच्चों

द्वारा बनाया गया एक कागज का थैला और एक पौधा गुरुदेव को उनकी उदार अनुकम्पा के लिये उपहार स्वरूप समर्पित किया गया।

गोला गोकरन नाथ आश्रम में ५१ आकांक्षी बच्चों ने १० दिन के शिविर में भाग लिया। शिविर में प्रत्येक दिन अभ्यासी भाइयों और बहिनों द्वारा यूनेस्को की किताब 'लर्निंग टू बी' से पाठों की व्याख्या की गयी। इसी प्रकार विभिन्न विभागों और क्षेत्रों, जैसे स्वास्थ्य, सुरक्षा, बैंकिंग, वानिकी, पुलिस, रेलवे आदि से अतिथि वक्ता आमन्त्रित किये गये और उन्होंने अपने विशेषज्ञता के क्षेत्र पर वार्तायें दी।

विभिन्न आयु वर्ग के १२० बच्चों ने **विशाखापट्टनम**, आन्ध्र प्रदेश में तीन दिन के शिविर में सहभागिता की। नैतिक मूल्यों पर आधारित क्रि याकलापों के साथ मिट्टी के सामान बनाना और समाचार पत्रों से पतंगें बनाना जैसी क्रियायें भी सम्मिलित थी। प्रतिभागियों को प्राथमिक चिकित्सा के मूल तत्व और सुरक्षा के बारे में भी सिखाया गया।

इन्दौर, मध्य प्रदेश में ४० बच्चों ने एक शिविर में भाग लिया। बच्चों ने प्रत्येक दिन एकता और भाईचारे की भावना को उत्पन्न करता हुआ एक समूह गान गाया। अन्तिम दिन बच्चों ने इन्दौर में नये आश्रम के लिए हाल ही में खरीदी गयी, वृक्षों से भरपूर दूरस्थ भूमि पर पिकनिक का आनन्द लिया।

बच्चों ने प्रत्येक वर्ष ग्रीष्मकालीन शिविरों में भाग लेने में सोत्साह अपनी प्रसन्नता व्यक्त की और अधिकांश केन्द्रों में आयोजकों से शिविरों के समय को बढ़ाने का अनुरोध किया। स्वंयसेवकों सहित जिन्होंने भी इन शिविरों में भाग लिया, उनके लिये ये शिविर अच्छे ज्ञान और मनोरंजन के साधन रहे।

घोषणा

खड़गपुर, पश्चिम बंगाल स्थित क्रैस्ट संस्थान अब एक रिट्रीट केन्द्र कहलायेगा। यह केन्द्र पूर्व से ही कार्यरत दो रिट्रीट केन्द्रों, मलमपुज़ा, केरल और पुणे, महाराष्ट्र के अलावा है। खड़गपुर स्थित यह रिट्रीट केन्द्र प्रमुख रुप से देश के उत्तरी और पूर्वी भागों के अभ्यासियों की आवश्यकताओं को पूरा करेगा। बंगलोर स्थित क्रेस्ट संस्थान अपनी शोध, शिक्षा, साधना और प्रशिक्षण से सम्बन्धित गतिविधियों को जारी रखेगा, जो फ़िलहाल भारत में इस प्रकार का एकमात्र केन्द्र है।

भीलवाड़ा, राजस्थान

बच्चों के लिये नैतिक मूल्यों पर भीलवाड़ा केन्द्र में दो दिन का कार्यक्रम आयोजित किया गया। ११ मई को एक चलचित्र दिखाया गया जिसके बाद प्रतिभागियों के बीच वार्तालाप को विकसित करने के लिये कुछ खेल रखे गये थे। १७ मई के सत्र में १५ शिक्षकों सहित १३ से १७ वर्ष आयु वर्ग के लगभग ८० युवाओं ने भाग लिया।

इस सत्र का प्रारम्भ गुरुदेव की डी.वी.डी प्रदर्शन के साथ हुआ, जिसके बाद नैतिक मूल्यों पर आधारित कुछ वीडियो चलाये गये। सभी प्रतिभागियों से यह बताने को कहा गया कि उन्होंने इन वीडियो के अंशों से क्या संदेश ग्रहण किया।

दोपहर के भोजन के पश्चात् गुरुदेव की वार्ता दिखायी गयी। प्रेम, दयालुता, त्याग और वास्तविक जीवन की घटनाओं पर आधारित उसी समय तैयार एक नाटक की प्रस्तुति के बाद सकारात्मक दृष्टिकोण रखने की आवयश्कता पर एक वार्ता हुयी। पाईप और गेंद की सहायता से लक्ष्य के महत्व पर खेले गये खेल ने भाईचारा, प्रेम, सहयोग भावना और समन्वय के सद्गुणों को प्रदर्शित किया। अन्तिम सत्र में गुरु के महत्व पर चर्चा हुई। सभी ने सम्पूर्ण कार्यक्रम का आनन्द लिया।

मुम्बई, महाराष्ट्र

२३ मई २०१४ को जुहू, मुम्बई स्थित बिल्ला बोंग हाई इन्टरनेशनल स्कूल में लगभग २५ अध्यापकों के लिये 'मूल्य आधारित शिक्षा' पर एक जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। विद्यालय के प्रधानाचार्य ने मूल्य आधारित कक्षाओं को संचालित करने के लिये स्वयंसेवकों को भी आमन्त्रित किया था। कार्यक्रम का शुभारम्भ बहन राखी अरोड़ा द्वारा मूल्य आधारित शिक्षा का परिचय देने के साथ हुआ, जिसके पश्चात् बहन ललिता ने एक वार्ता दी जिसमें उन्होंने वर्तमान समय में समाज में प्रचलित बुराइयों के प्रभाव तथा घरों व विद्यालयों में मूल्य आधारित शिक्षा की आवश्यकता पर बल दिया, ताकि बच्चे आन्तरिक तौर पर मजबूत बन सकें। इसके उपरान्त पिता और पुत्र की कहानी पर एक वीडियो दिखाया गया। यह एक हृदय को छू लेने वाली कहानी थी और अध्यापकों ने यह महसूस किया कि अभिभावकों को और साथ ही साथ अध्यापकों को भी बच्चों को समझने और उन्हें सही मार्ग पर बनाये रखने हेतु मार्गदर्शन के लिए समय देने की आवश्यकता है। कार्यक्रम के पश्चात् कुछ अध्यापकों ने स्वयं सेवकों से अनौपचारिक बातचीत की और कुछ ने ध्यान के बारे में और अधिक समझने तथा इसको आरम्भ करने में रुचि दिखाई।

करकाला, कर्नाटक

१ जून २०१४ को करकाला केन्द्र में आयोजित एक पूर्ण दिवसीय कार्यक्रम में १२ अभ्यासियों ने भाग लिया। गुरुदेव की वार्ता की एक वीडियो दिखाये जाने के पश्चात् बहन नलिनी ने कार्यक्रम की विषयवस्तु 'साधना में प्रवृत्ति की भूमिका' का परिचय दिया। उन्होंने सही प्रवृत्ति रखने की आवश्यकता के विषय में बताया और यह भी कि दस उसूलों के नियमित अभ्यास से सही प्रवृत्ति का विकास करने में किस तरह सहायता प्राप्त होती है। प्रतिभागियों से उनके जीवन के लक्ष्य और उनकी दैनिक साधना से सम्बन्धित कुछ प्रश्नों के आधार पर स्वयं का मूल्यांकन करने के लिए कहा गया। बहन नलिनी ने सकारात्मक प्रवृत्ति अपनाने की आवश्यकता पर बल दिया और उन तत्वों के विषय में भी बताया जो कि हमारी उन्नति के लिये हानिकारक हैं। कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रदर्शित प्रस्तुतिकरण में गुरुदेव की वार्ताओं के कई अंश सम्मिलित किये गये थे। दोपहर के भोजन के पश्चात् सामूहिक चर्चा और प्रवृत्ति से सम्बन्धित कहानियों का आयोजन था। कार्यक्रम के अन्तिम सत्र में प्रतिभागियों को दो समूहों में बाँटा गया। प्रत्येक समूह को सुनाई गई कहानियों के आधार पर दो लघु नाटिकायें प्रस्तुत करने के लिये कहा गया। शाम के सत्संग के पश्चात् कार्यक्रम का समापन हुआ।

शोलावंदन आश्रम, तमिलनाडु

२५ मई को मदुरई, वादिपट्टी, उसिलमपट्टी, चिन्नलापट्टी और बटलागुंडू से आये १५० अभ्यासी शोलावंदन आश्रम में एक दिवसीय कार्यक्रम के लिये एकत्रित हुए, जिसका विषय था 'सहजमार्ग और पारिवारिक जीवन'। चैन्नई से बहन कस्तूरी वैंकटचलम, मदुरई से भाई पलनीअप्पन और चिन्नलपट्टी केन्द्र से बहन सावित्री इस कार्यक्रम में आमन्त्रित संकाय सदस्य थे।

कार्यक्रम का आरम्भ बहन कस्तूरी की एक वार्ता के साथ हुआ जिसमें उन्होंने यह स्पष्ट किया कि गुरु और शिष्य का सम्बन्ध कई जन्मों तक जारी रहता है। अपनी वार्ता में भाई पलनीअप्पन ने उसूल ५ और ७ का अच्छे ढंग से वर्णन किया और बहुत ही सुन्दरता से अभ्यासियों को यह संदेश दिया कि हमारे कष्ट ईश्वर की ओर से हमारे लिए आशीर्वाद हैं। अपनी वार्ता में बहन सावित्री ने एक अभ्यासी के लिए पारिवारिक जीवन के महत्व पर बल दिया। दोपहर के भोजन के पश्चात् 'सहजमार्ग अभ्यास आरम्भ करने के बाद स्वयं में बदलाव' विषय पर सामूहिक चर्चा हुई। बहन कस्तूरी ने एक संक्षिप्त वार्ता के साथ चर्चा का समापन किया। कार्यक्रम शाम के सत्संग के साथ सम्पन्न हुआ।

गंगटोक आश्रम, सिक्किम

प्रकाश का केन्द्र

गंगटोक, छोटे पर्वतीय राज्य सिक्किम की राजधानी है जो पूर्वी हिमालय में, तेजस्वी कंचनजंघा पर्वत की गोद में स्थित है। सिक्किम राज्य तीन अन्तर्राष्ट्रीय सीमाओं से घिरा हुआ है – पश्चिम में नेपाल, उत्तर में तिब्बत और इसकी पूर्वी सीमा की ओर भूटान। यह भूमि अपनी प्राकृतिक विविधता से भरपूर तेज बहती नदी की धाराओं, अधिक ऊँचाइयों पर स्थित झीलों, हिमनदियों (ग्लेशियरों) और जंगलों के लिये जानी जाती है।

गंगटोक केन्द्र नवम्बर २००५ में प्रारम्भ हुआ जब रविवारीय सत्संग एक अभ्यासी के घर में आयोजित किये जाते थे। नवम्बर २००९ में गुरुदेव की गंगटोक यात्रा से सिक्किम धन्य हुआ। वे गंगटोक में तीन दिन रहे और वहाँ आकर अतीव प्रसन्न हुए। इसी यात्रा के दौरान गंगटोक में अपना आश्रम होने के विचार ने जन्म लिया।

वर्ष २०११ में, सिक्किम सरकार ने ०.३३ एकड़ भूखण्ड मिशन को आबंटित करने का निर्णय लिया। यह भूखण्ड गंगटोक शहर के ठीक मध्य में स्थित था। गुरुदेव ने इस स्थान पर आश्रम के निर्माण की अनुमति प्रदान की। १२ सितम्बर २०११ को पहुँच मार्ग और चारों ओर की दीवार का निर्माणकार्य प्रारम्भ हुआ। कहते हैं कि प्रकृति मनुष्य की इच्छाशक्ति एवं विश्वास की परीक्षा लेती है, और यह परीक्षा वास्तव में हुई जब निर्माण कार्य प्रारम्भ होने के छः दिन बाद ही १८ सितम्बर २०११ को एक विध्वंसकारी भूकम्प ने सिक्किम को अपनी चपेट में ले लिया। इस घटना ने बनावट के मापदण्डों में परिवर्तन कर आश्रम को भूकम्परोधी बनाने की आवश्यकता बताई और मार्च २०१२ में निर्माण कार्य फिर से प्रारम्भ किया गया। गुरुदेव की कृपा से खड़े ढलान वाली भूमि और तेज बारिश इत्यादि की चुनौतियों पर नियन्त्रण पा लिया गया। गुरुदेव के निर्देशानुसार भवन के सामने की डिजायन इस प्रकार बनायी गयी कि वह चारों ओर के परिवेश से मिल जाये। आश्रम यद्यपि छोटे से भूखण्ड पर निर्मित किया गया है लेकिन इस में सभी प्रकार की सुविधायें हैं; जैसे २०० अभ्यासियों के बैठने की क्षमता वाला ध्यानकक्ष, अध्यक्ष का कार्यालय, भोजन कक्ष, भन्डारगृह के साथ रसोई घर, आश्रम प्रबन्धक का निवास, बच्चों का केन्द्र, कई शौचालय तथा एक समय में २० अभ्यासियों के रहने के लिये कक्ष।

आश्रम की अवस्थिति में दोनों ओर ताजे पानी के प्रवाह और उत्तर पूर्व में खूबसूरत घाटी के दृश्य उल्लेखनीय हैं।

आश्रम का उद्घाटन गुरुदेव द्वारा २२ जुलाई २०१३ को गुरु पूर्णिमा के दिन चेन्नई से किया गया। गंगटोक के अभ्यासी आश्रम की डी.वी.डी. सहित वहाँ उपस्थित थे। उद्घाटन के बाद गुरुदेव ने कहा, "... कमलेश, यदि बाबूजी अनुमति दें तो मैं इस जगह जाना चाहता हूँ ।...."

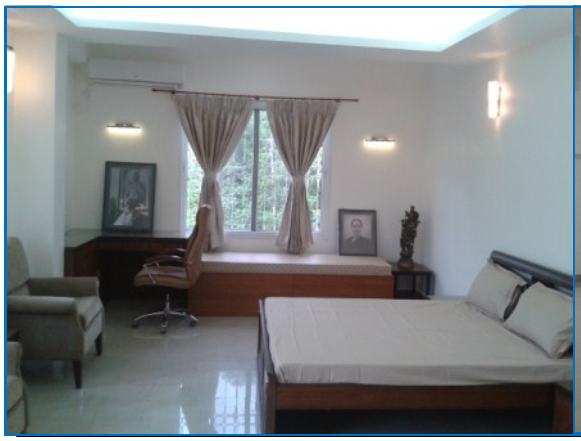

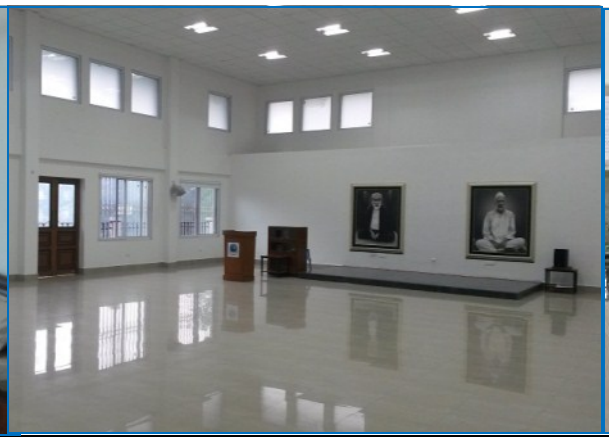

To download or subscribe to this newsletter, please visit http://www.sahajmarg.org/newsletter/india For feedback, suggestions and news articles please send email to in.newsletter@srcm.org
© 2014 Shri Ram Chandra Mission ("SRCM"). All rights reserved. "Shri Ram Chandra Mission", "Sahaj Marg", "SRCM", "Constant Remembrance" and the Mission's Emblem are registered Trademarks of Shri Ram Chandra Mission.This Newsletter is intended exclusively for the members of SRCM. The views expressed in the various articles are provided by various volunteers and are not necessarily those of SRCM.